विभिन्न माध्यम के लिए लेखन कक्षा 12

लेखन अभिव्यक्ति का एक माध्यम है , जिस प्रकार व्यक्ति बोलकर अपनी भावनाओं तथा विचारों को दूसरों तक पहुंचाता है। उसी प्रकार लेखन अपने विचार विनिमय का एक माध्यम है। आज लेखन का विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग किया जा रहा है जैसे – पत्र-पत्रिका , सिनेमा , रेडियो , समाचार , साहित्य आदि के लिए।

जनसंचार के विभिन्न माध्यम

- जनमानस द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले जनसंचार के अनेक माध्यम है जैसे – मुद्रित (प्रिंट) , रेडियो , टेलिविजन एवं इंटरनेट।
- मुद्रित अर्थात समाचार पत्र – पत्रिकाएं पढ़ने के लिए , रेडियो सुनने के लिए , टीवी देखने और सुनने के लिए तथा इंटरनेट पढ़ने , सुनने और देखने के लिए प्रयुक्त होते हैं।
- अखबार पढ़ने के लिए , रेडियो सुनने के लिए और टीवी देखने के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- किंतु इंटरनेट पर पढ़ने , देखने और सुनने तीनों की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।

जनसंचार के मुद्रित (प्रिंट) माधयम –

- जन संचार के आधुनिक माध्यमों में मुद्रित (प्रिंट) सबसे ज्यादा पुराना माध्यम है।
- जिसके अंतर्गत समाचार पत्र पत्रिकाएं आती है।
- मुद्रण का प्रारंभ चीन में हुआ , तत्पश्चात जर्मनी के गुटेनबर्ग में छापाखाना की खोज की।
- **भारत में सन 1556 में गोवा में पहला छापाखाना खुला**।
- इसका प्रयोग मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए किया था।
- आज मुद्रण कंप्यूटर की सहायता से होता है।

जनसंचार मुद्रित माध्यमों की खूबियां –

- मुद्रित माध्यमों की खूबियां देखें तो हम पाएंगे कि सभी की अपनी कमियां है और विशेषताएं भी है।
- लिखे हुए शब्द स्थाई होते हैं।
- इन लिखे हुए शब्दों को हम एक बार ही नहीं अनेकों बार पढ़ सकते हैं।
- अपनी रुचि और समझ के अनुसार उस स्तर के शब्दों से परिचित हो सकते हैं।
- उसका अध्ययन चिंतन मनन किया जा सकता है।
- जटिल शब्द आने पर शब्दकोश का प्रयोग भी किया जा सकता है।
- इसके अतिरिक्त भी खबर को अपनी रूचि के अनुसार पहले तथा बाद में पढ़ा जा सकता है।
- चाहे तो किसी भी सामग्री को लंबे समय तक सुरक्षित रखा भी जा सकता है।

जनसंचार मुद्रित माध्यमों की कमियां –

- मुद्रित माध्यम की खामियां भी है जैसे अशिक्षित लोगों के लिए अनुपयोगी।
- टेलीविजन तथा रेडियो की भांति मुद्रित माध्यम तुरंत घटी घटना की जानकारी नहीं दे पाता।
- समाचार पत्र निश्चित अवधि अर्थात 24 घंटे में एक बार , सप्ताहिक सप्ताह में एक बार तथा मासिक में माह में एक बार प्रकाशित किया जाता है।
- किसी भी खबर या रिपोर्ट के प्रकाशन के लिए एक डेड लाइन (समय सीमा) होती है।
- स्पेस (स्थान) सीमा भी होती है , जबकि रेडियो , टेलीविजन , इंटरनेट माध्यम पर ऐसा प्रतिबंध नहीं होता।
- महत्व एवं जगह की उपलब्धता के अनुसार किसी भी खबर को स्थान दिया जाता है।
- मुद्रित माध्यम में अशुद्धि होने पर सुधार हेतु अगले अंक की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।
- अन्य माध्यमों में तत्काल सुधार किया जा सकता है।

जनसंचार मुद्रित माध्यमों की भाषा शैली –

- मुद्रित माध्यम में लेखन के लिए भाषा , व्याकरण , शैली , वर्तनी , समय सीमा , आवंटित स्थान , अशुद्धि शोधन एवं तारतम्यता पर विशेष ध्यान देना जरूरी है।
- लेखन तथा भाषा शैली पाठक वर्ग को ध्यान में रखकर किया जाता है।

रेडियो (विभिन्न माध्यम)

- रेडियो जनसंचार का श्रव्य माध्यम है
- जिसके ध्वनि , शब्द और स्वर ही प्रमुख हैं
- रेडियो मूलतः एक रेखीय (लीनियर) माध्यम है
- रेडियो समाचार की संरचना समाचार पत्रों तथा टीवी की तरह उल्टा पिरामिड शैली पर आधारित होती है
- जिसमें अखबार की तरह पीछे लौटकर सुनने की सुविधा नहीं होती
- लगभग 90 फ़ीसदी समाचार या स्टोरीज इस शैली में लिखी जाती है।

उल्टा पिरामिड शैली किसे कहते हैं

उल्टा पिरामिड शैली मे समाचार पत्र के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सर्वप्रथम लिखा जाता है। उसके बाद घटते हुए महत्व क्रम में दूसरे तथ्यों या सूचनाओं को बताया जाता है। अर्थात कहानी की तरह क्लाइमैक्स अंत में नहीं वरन खबर के प्रारंभ में आ जाता है। इस शैली के अंतर्गत समाचारों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है – १ इंट्रो २ बॉडी ३ समापन।

1. **इंट्रो** – समाचार का मुख्य भाग होता है
2. **बॉडी** – घटते हुए क्रम में खबर को विस्तार से लिखा जाता है। ब्यौरा प्रस्तुत किया जाता है।
3. **समापन** – अधिक महत्वपूर्ण ना होने पर अथवा स्पेस ना होने पर इसे काट कर छोटा भी किया जा सकता है।

समाचार लेखन की बुनियादी बातें

- साफ-सुथरी टाइप की हुई कॉपी , ट्रिपल स्पेस में टाइप करते हुए दोनों और हाशिए छोड़ें।
- एक पंक्ति में 12-13 शब्दों से अधिक ना हो।
- पंक्ति के अंत में विभाजित शब्द का प्रयोग ना करें
- समाचार कॉपी में जटिल एवं संक्षिप्त आकार का प्रयोग ना करें
- लंबे अंको को तथा दिनांक को शब्दों में लिखें
- निम्नलिखित , क्रमांक , अधोहस्ताक्षरी , किन्तु , लेकिन , उपर्युक्त , पूर्वक जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए
- वर्तनी पर विशेष ध्यान दें
- समाचार लेखन की भाषा को प्रभावी बनाने के लिए आम बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग करें।

टेलीविजन (विभिन्न माध्यम)

- टेलीविजन जनसंचार का दृश्य श्रव्य माध्यम है
- यह रेडियो की भांति एक रेखीय माध्यम है
- टेलीविजन में शब्दों व ध्वनियों की अपेक्षा दृश्यों का महत्व अधिक होता है
- इस में दृश्य शब्दों के अनुरूप उनके सहयोगी के रुप में चलते हैं
- इस में कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक खबर बताने की शैली का प्रयोग किया जाता है
- अतः टेलीविजन में समाचार लेखन की प्रमुख शर्त दृश्य के साथ लेखन है।

टेलीविजन खबरों के प्रमुख चरण –

प्रिंट अथवा रेडियो की भांति टेलीविजन चैनल समाचार देने का मूल आधार सूचना देना है। टेलीविजन में यह सूचनाएं इन चरणों से होकर गुजरती है।

1. फ्लैश बैक(ब्रेकिंग न्यूज़)
2. ड्राई एंकर
3. फोन इन
4. एंकर विजुअल
5. एंकर बाइट
6. लाइव
7. एंकर पैकेज

टेलीविजन खबरों की विशेषताएं –

- देखने और सुनने की सुविधा
- जीवंत घटनाओं का प्रसारण
- प्रभावशाली खबर से परिचित होना
- समाचारों का लगातार प्रसारण देख पाना।

टेलीविजन खबरों की कमियां –

- भाषा शैली के स्तर पर अत्यंत सावधानी
- बाइट का ध्यान रखना आवश्यक है
- कार्यक्रम का सीधा प्रसारण कभी-कभी सामाजिक उत्तेजना को जन्म दे सकता है
- और परिपक्व बुद्धि पर सीधा प्रभाव डालता है

रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा

- भाषा के स्तर व गरिमा को बनाए रखते हुए सरल भाषा का प्रयोग करें।
- सभी वर्ग तथा स्तर के लोग समझ सके इसका ध्यान रखना चाहिए
- छोटे वाक्य तथा सरल और कर्णप्रिय हो
- वाक्यों में तारतम्यता हो
- जटिल शब्दों सामाजिक शब्दों एवं मुहावरों के अनावश्यक प्रयोग से बचें
- जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द संक्षिप्त अंक आदि नहीं लिखने चाहिए जिन्हें पढ़ने में जबान लड़खड़ा जाए

इंटरनेट (विभिन्न माध्यम)

इंटरनेट की दीवानी नई पीढ़ी को अब समाचार पत्र पर छपे समाचार पढ़ने में आनंद नहीं आता। उन्हें स्वयं को घंटे -दो घंटे में अपडेट रहने की आदत सी बन गई है। इंटरनेट पत्रकारिता , ऑनलाइन पत्रकारिता , साइबर पत्रकारिता या वेब पत्रकारिता इसे कुछ भी कह सकते हैं।

इसके द्वारा जहां हम सूचना , मनोरंजन , ज्ञान तथा निजी व सार्वजनिक संवादों का आदान – प्रदान कर सकते हैं। वहीं इसे अश्लील , दुष्प्रचार एवं गंदगी फैलाने का माध्यम भी बनाया जा रहा है। इंटरनेट का प्रयोग समाचारों के संप्रेषण संकलन तथा सत्यापन एवं पुष्टिकरण में भी किया जा रहा है। टेलीप्रिंटर के जमाने में जहां 1 मिनट में केवल 80 शब्द एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजे जा सकते थे। वही आज एक सेकंड में लगभग 70000 शब्द भेजे जा सकते हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु

- इंटरनेट पर समाचार पत्र का प्रकाशन अथवा खबर का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है।

- इंटरनेट पर यदि हम किसी भी रूप में समाचारों लेखों चर्चा – परिचर्चा , बहसों , फीचर , झलकियों के माध्यम से अपने समय की धड़कनों को अनुभव कर दर्ज करने का कार्य करते हैं तो वही इंटरनेट पत्रकारिता है।
- इसी पत्रकारिता को वेब पत्रकारिता भी कहा जाता है।
- इस समय विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का तीसरा दौर चल रहा है , जबकि भारत में दूसरा दौर माना जाता है।
- भारत के लिए **प्रथम दौर 1993** से प्रारंभ माना जाता है और **दूसरा दौर 2003 से** माना जाता है।
- भारत में सच्चे अर्थों में यदि कोई भी पत्रकारिता कर रहा है तो वह rediff.com , इंडिया इन्फोलाइन , तथा सीफी जैसी कुछ सीटें हैं।
- रेडिफ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है।
- वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता करने का श्रेय तहलका डॉट कॉम को जाता है।
- हिंदी में नेट पत्रकारिता वेबदुनिया के साथ प्रारंभ हुई।
- इंदौर के नई दुनिया समूह से प्रारंभ हुआ यह पोर्टल हिंदी का संपूर्ण पोर्टल है। जागरण , अमर उजाला , नई दुनिया , हिंदुस्तान , भास्कर , राजस्थान पत्रिका , नवभारत टाइम्स , प्रभात खबर एवं राष्ट्रीय सहारा के वेब संस्करण प्रारंभ हुए।
- प्रभासाक्षी नाम से प्रारंभ हुआ अखबार प्रिंट रूप में ना होकर केवल इंटरनेट पर उपलब्ध है।
- आज पत्रकारिता के अनुसार श्रेष्ठ साइड बी.बी.सी. है
- हिंदी वेब जगत में आज अनेक साहित्यिक पत्रिकाएं चल रही है।
- कुल मिलाकर हिंदी की वेब पत्रकारिता अभी अपने शैशव काल में ही है।
- सबसे बड़ी समस्या हिंदी के फॉन्ट की है अभी हमारे पास हिंदी की कोई कीबोर्ड नहीं है।
- जब तक हिंदी के कीबोर्ड का मानकीकरण नहीं हो जाता तब तक इस समस्या को दूर नहीं किया जा सकता।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर – विभिन्न माध्यम

प्रश्न – जनसंचार के प्रमुख साधन कौन-कौन से हैं ?

उत्तर – प्रिंट माध्यम , रेडियो , टेलीविजन , इंटरनेट।

प्रश्न – जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम कौन सा है ?

उत्तर – प्रिंट माध्यम

प्रश्न – सर्वप्रथम मुद्रण का प्रारंभ कहां हुआ ?

उत्तर – सर्वप्रथम मुद्रण का प्रारंभ चीन में हुआ।

प्रश्न – भारत में पहले छापेखाने की स्थापना किसने कब और कहां की ?

उत्तर – भारत में पहले छापेखाने की स्थापना में मिश्निरियों ने सन 1556 में गोवा में की।

प्रश्न – उल्टा पिरामिड शैली से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर – उल्टा पिरामिड शैली में समाचार को तीन हिस्सों में बांटा जाता है- १ इंट्रो (मुख्य खबर) २ बॉडी (घटते क्रम में समाचार का ब्यौरा) ३ समापन (आवश्यकता अनुसार इसे छोटा तथा बड़ा किया जा सकता है)

प्रश्न – टी.वी. पर प्रसारित खबरें किन-किन चरणों से होकर गुजरती है ?

उत्तर – टीवी पर प्रसारित होने वाली खबरें निम्न चरणों से होकर गुजरती है – फ्लैश , ब्रेकिंग न्यूज़ , एंकर , एंकर विजुअल , एंकर बाइट , लाइव , एंकर पैकेज।

प्रश्न – जन संचार के विभिन्न माध्यम का प्रमुख कार्य क्या है ?

उत्तर – जन संचार के विभिन्न माध्यम का प्रमुख कार्य सूचना देना , शिक्षित करना एवं मनोरंजन करना है।

प्रश्न – जन संचार के माध्यमों द्वारा किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए।

उत्तर – सहज सरल और जनमानस के बिल्कुल निकट हो जिससे अधिक से अधिक लोग एवं हर स्तर के लोग समझ सके छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग होना चाहिए।

प्रश्न – नई पीढ़ी में इंटरनेट के अधिक लोकप्रिय होने का क्या कारण है ?

उत्तर – नई पीढ़ी को अब समाचार पत्र पर समाचार पढ़ने में आनंद नहीं आता। उन्हें स्वयं को समय-समय पर अपडेट रखने की आदत पड़ गई है यही कारण है कि नई पीढ़ी इंटरनेट की दीवानी है। इंटरनेट द्वारा सूचना , विज्ञान तथा निजी व सार्वजनिक संवाद का आदान – प्रदान कर सकते हैं।

प्रश्न – भारत में वेबसाइट पर पत्रकारिता कौन कर रहा है ?

उत्तर – तहलका डॉट कॉम।

प्रश्न – भारत में वेब पत्रकारिता कौन कर रहा है ?

उत्तर – rediff.com , इंडिया इन्फोलाइन , सीफी।

प्रश्न – उस खबर का नाम लिखिए जो प्रिंटर रूप में उपलब्ध ना होकर केवल इंटरनेट पर उपलब्ध है ?

उत्तर – प्रभासाक्षी

प्रश्न – हिंदी के किन्ही दो अखबारों के नाम लिखो जिनके वेब संस्करण उपलब्ध है।

उत्तर – जागरण , हिंदुस्तान , नवभारत टाइम्स आदि।

प्रश्न – वेब में प्रकाशित किन्हीं तीन पत्रिकाओं के नाम लिखो।

उत्तर – अनुभूति , अभिव्यक्ति , हिंदी नेस्ट , सहारा आदि

प्रश्न – ब्रेकिंग न्यूज़ से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर – किसी भी बड़ी खबर को फ्लैश अथवा ब्रेकिंग न्यूज़ के रूप में तत्काल दर्शकों तक पहुंचाना ब्रेकिंग न्यूज़ है। इसमें कम से कम शब्दों में केवल सूचना दी जाती है।

प्रश्न – रेडियो तथा टीवी जनसंचार के कैसे माध्यम है ?

उत्तर – रेडियो श्रव्य माध्यम , टीवी दृश्य एवं श्रव्य माध्यम है।

प्रश्न – मुद्रित माध्यम के छपने से पहले संपादक को किस बात का ध्यान रखना पड़ता है ?

उत्तर – छपने से पहले आलेख में मौजूद सभी गलतियों और अशुद्धियों को दूर करना पड़ता है। प्रकाशन के बाद वह गलती नहीं सुधारी जा सकती उसके लिए नए अंक की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

प्रश्न – मुद्रित माध्यम की सबसे बड़ी विशेषता क्या है ?

उत्तर – मुद्रित माध्यम की सबसे बड़ी विशेषता शब्दों में स्थायित्व होना , भाषा का विस्तार होना तथा चिंतन विचार एवं विश्लेषण का माध्यम होना और संग्रह करने की सुविधा का होना है।

प्रश्न – मुद्रित माध्यम के अंतर्गत कौन कौन से माध्यम आते हैं ?

उत्तर – मुद्रित माध्यम के अंतर्गत पत्र-पत्रिका समाचार साहित्य आदि आते हैं।

प्रश्न – रेडियो जनसंचार का कैसा माध्यम है ?

उत्तर – रेडियो जनसंचार का श्रव्य माध्यम है। रेडियो से संगीत तथा समाचार जैसी आवाजों को सुना जा सकता है।

प्रश्न – रेडियो समाचार किस शैली में लिखे जाते हैं ?

उत्तर – रेडियो समाचार उल्टा पिरामिड शैली के आधार पर ही लिखा जाता है। इसमें लौटने की विशेषता नहीं होती , इसके लिए धाराप्रवाह वाचन किया जाता है।

प्रश्न – रेडियो समाचार में डेडलाइन से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर – रेडियो समाचार में समय का निर्धारण और उसका पालन महत्वपूर्ण है जो इसका डेडलाइन कहलाता है।

प्रश्न – टेलीविजन जनसंचार का कैसा माध्यम है ?

उत्तर – टेलीविजन जनसंचार का दृश्य श्रव्य माध्यम है। इसके माध्यम से घटना को देखा तथा सुना जा सकता है।

प्रश्न – टी.वी पर प्रसारित समाचारों की मुख्य दो शर्तें कौन सी है ?

उत्तर – टीवी पर प्रसारित समाचारों की शर्तें समाचार जीवंत होना चाहिए लोक रूचि के अनुसार होने चाहिए तथा सत्य पर आधारित इसकी प्रमुख शर्तें है।

प्रश्न – इंटरनेट के क्या लाभ हैं ?

उत्तर – इंटरनेट व्यक्ति को स्वतंत्रता प्रदान करता है। व्यक्ति अपने मन मुताबिक किसी भी स्थान पर किसी भी समाचार , मनोरंजन तथा ज्ञान के विषय को देख अथवा सुन सकता है और उसका आनंद ले सकता है।

प्रश्न – इंटरनेट पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर – इंटरनेट पत्रकारिता समय की बचत के साथ-साथ उसको पढ़ने तथा उसे जुड़ने और संग्रह करने की सुविधा देता है।
यह आज की युवा पीढ़ी का सबसे पसंदीदा क्षेत्र है।

प्रश्न – भारत में इंटरनेट का कौन सा दौर चल रहा है और इसे कब से शुरू माना जाता है ?

उत्तर – भारत में इंटरनेट का अभी दूसरा दौर चल रहा है। पहला दौर 1993 से तथा दूसरा दौर 2003 से माना जाता है।

प्रश्न – हिंदी वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या क्या है ?

उत्तर – हिंदी वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या उसका लेखन शैली है , क्योंकि अन्य भाषाओं की भांति इस का कीबोर्ड अभी भी बाजारों में उपलब्ध नहीं है। एक निश्चित रूप रेखा का कीबोर्ड पर नहीं होने के कारण लेखन क्रिया कठिन विषय है।

प्रश्न – क्लाइमेक्स किसे कहते हैं ?

उत्तर – किसी भी घटना , सूचना आदि का संपूर्ण उद्घाटन वास्तविक रूप से परिचय कराना या उस चरम बिंदु पर पहुंचना , जहां से पूरी घटना का सार समझते हुए निवारण की ओर दिशा परिवर्तित होता है वह बिंदु क्लाइमैक्स कहलाता है।

पत्रकारिता लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

लोकतंत्र में अखबार एक पहरेदार शिक्षक और जनमत निर्माण का कार्य करते हैं।
अखबार पाठकों को सूचना देने जागरूक और शिक्षित बनाने उसका मनोरंजन करने के दायित्व को निभाते हैं।
पत्रकार इस दायित्व की पूर्ति के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का प्रयोग करते हैं इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।
पत्रकारिता लेखन के विभिन्न प्रकार एवं सृजनात्मक लेखन एक दूसरे से भिन्न है।

पत्रकार के प्रकार –

- पूर्णकालिक – किसी समाचार संगठन के नियमित वेतन भोगी होता है।
- अंशकालिक – एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाले होते है।
- फ्रीलांसर – स्वतंत्र पत्रकार जो भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखते हैं।

छह प्रकार – किसी भी समाचार में छः प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया जाता है।

- क्या हुआ ?

- कैसे हुआ ?
- किसके साथ हुआ?
- क्या हुआ ?
- कहां हुआ ?
- कब हुआ ?

उल्टा पिरामिड शैली (पत्रकारिता लेखन के विभिन्न प्रकार)

मुखड़ा – सबसे महत्वपूर्ण बात / बॉडी – कुछ कम महत्वपूर्ण बात /समापन – सबसे कम महत्वपूर्ण बात

फीचर एक सुव्यवस्थित सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है। जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना , शिक्षित करना तथा मनोरंजन करना होता है।

फीचर तथा समाचार में अंतर

समाचार	फीचर
1 समाचार का कार्य पाठकों को सूचना देना होता है	1 फीचर एक सुव्यवस्थित सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है
2 इसका उद्देश्य पाठकों को ताजी घटना से अवगत कराना होता है	2 इसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना , शिक्षित करना और मनोरंजन करना होता है
3 इसमें शब्द सीमा होती है	3 इसमें शब्द सीमा नहीं होती अच्छे फीचर 200 से 2000 शब्दों तक होते हैं
4 इसमें लेखक के विचारों की कल्पना के लिए कोई स्थान नहीं होता	4 इसमें लेखक की कल्पना और विचारों को भी स्थान मिलता है
5 इसमें फोटो का होना अनिवार्य है	5 अच्छे फीचर के साथ फोटो या ग्राफिक्स होना अनिवार्य है

फीचर के प्रकार –

- समाचार बैकग्राउंड फीचर ,
- खोजपरक साक्षात्कार फीचर ,
- जीवन शैली फीचर ,
- रूपात्मक फीचर ,
- व्यक्तित्व चरित्र फीचर ,
- यात्रा फीचर आदि।

विशेष रिपोर्ट – समाचार पत्र – पत्रिकाओं में गहरी छानबीन , विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर जो रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है उसे विशेष रिपोर्ट कहते हैं।

विशेष रिपोर्ट के प्रकार

- खोजी रिपोर्ट – पत्रकार ऐसी सूचना और तथ्यों को छानबीन कर जनता के समक्ष लाता है जो पहले सार्वजनिक ना हो।
- इन डेप्थ रिपोर्ट – सार्वजनिक रूप से प्राप्त तथ्यों सूचनाओं और आंकड़ों की गहरी छानबीन कर महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है।
- विश्लेषणात्मक रिपोर्ट – घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों का विश्लेषण और व्याख्या की जाती है।
- विवरणात्मक रिपोर्ट – समस्या का विस्तृत विवरण दिया जाता है।

आमतौर पर विशेष रिपोर्ट को उल्टा पिरामिड शैली में लिखा जाता है लेकिन विषय अनुसार रिपोर्ट में फीचर शैली का भी प्रयोग होता है। इसे फीचर रिपोर्ट कहते हैं।

विशेष रिपोर्ट की भाषा सरल , सहज और आम बोलचाल की होनी चाहिए।

विचारपरक लेखन –

अखबारों में संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय अग्रलेख टिप्पणियां विचार परख लेखन में आते हैं।

संपादकीय –

संपादकीय को अखबार की आवाज माना जाता है क्योंकि संपादकीय किसी व्यक्ति विशेष के विचार नहीं होते।

संपादकीय का दायित्व संपादक और उसके सहयोगियों पर होता है , इसलिए इसके नीचे किसी का नाम नहीं होता।

संपादकीय के जरिए अखबार किसी घटना या मुद्दे पर अपनी राय प्रकट करता है।

स्तंभ लेखन –

कुछ लेखक अपने वैचारिक रुझान और लेखन शैली के लिए पहचाने जाते हैं। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता देखकर समाचार पत्र उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा देता है। स्तंभ का विषय चुनने एवं उसमें अपने विचार व्यक्त करने की लेखक को पूर्ण छूट होती है। कुछ स्तंभ इतने लोकप्रिय होते हैं कि वह अपने लेखक के नाम से पहचाने जाते हैं।

संपादक के नाम पत्र –

यह स्तंभ जनमत को प्रतिबिंबित करता है यह अखबार का एक स्थाई स्तंभ है , जिसके जरिए पाठक विभिन्न मुद्दों पर ना सिर्फ अपनी राय प्रकट करता है अपितु जन समस्याओं को भी उठाता है।

लेख – संपादकीय पृष्ठ पर वरिष्ठ पत्रकार और विषय विशेषज्ञ किसी विषय पर विस्तार से चर्चा करते हैं इसमें लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है। किंतु इसमें लेखकों एवं तथ्यों के जरिए अपनी राय प्रस्तुत करता है।

साक्षात्कार –

साक्षात्कार का एक स्पष्ट मकसद होता है , एक सफल साक्षात्कार के लिए केवल ज्ञान अपितु संवेदनशीलता कूटनीति धैर्य और साहस जैसे गुण भी होने चाहिए।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर (विषय : पत्रकारिता लेखन के विभिन्न प्रकार)

प्रश्न – फीचर से क्या अभिप्राय है ? फीचर कितने प्रकार के होते हैं ? इसकी विशेषता बताइए।

उत्तर – फीचर व्यवस्थित सृजनात्मक लेखन है , जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना , शिक्षित करना और मुख्य रूप से मनोरंजन करना होता है। फीचर कई प्रकार के होते हैं जिसमें मुख्य हैं –

- समाचार बैकग्राउंड फीचर
- खोजपरक फीचर
- साक्षात्कार फीचर
- जीवन शैली फीचर
- रूपात्मक फीचर
- व्यक्ति चित्र फीचर
- यात्रा फीचर
- विशेष कार्य फीचर

फीचर की विशेषताएं –

फीचर की शैली तथ्यात्मक शैली के तरह होती है। इसका आकार रिपोर्ट से बड़ा होता है , एक अच्छे से रोचक फीचर के साथ फोटो रेखांकन या ग्राफिक्स का होना अनिवार्य है। फीचर में शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती , फीचर बोझिल नहीं होते।

प्रश्न – विशेष रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं ? विशेष रिपोर्ट कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर – विशेष रिपोर्ट समाचार पत्र और पत्रिकाओं में शहरी छानबीन विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर जो रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है उसे विशेष रिपोर्ट कहते हैं।

विशेष रिपोर्ट के प्रकार – विशेष रिपोर्ट के प्रमुख चार प्रकार होते हैं —

- खोजी रिपोर्ट – जिस रिपोर्ट में पत्रकार उन सूचनाओं और तथ्यों को छानबीन करके जनता के सामने लाता है जो पहले सबके समक्ष ना आए हो।
- इंन डेप्थ रिपोर्ट – सार्वजनिक रूप से प्राप्त तथ्यों सूचनाओं और आंकड़ों की गहरी छानबीन कर महत्वपूर्ण पहलुओं को जनता के सामने लाने वाली रिपोर्ट रिपोर्ट कहलाती है।
- विश्लेषणात्मक रिपोर्ट – जिस रिपोर्ट में घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों का विस्तार से विश्लेषण और व्याख्या की जाए।
- विवरणात्मक रिपोर्ट – रिपोर्ट में समस्या का विस्तृत वर्णन और बारीकी से बारीकी तथ्य उद्घाटित किया जाए इसके अलावा और भी बहुत सी अन्य रिपोर्ट है जो विशेष रिपोर्ट के दर्जे में आती है।

फीचर रिपोर्ट – सामान्यता रिपोर्ट उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं , किंतु एक शैली में लिखी जाने वाली रिपोर्ट फीचर रिपोर्ट कहलाती है।

विशेष लेखन स्वरूप और प्रकार

विशेष लेखन – समाचार पत्र सामान्य समाचारों के अलावा साहित्य , विज्ञान , खेल इत्यादि की भी पर्याप्त जानकारी देते हैं। इसी कार्य के अंतर्गत **जब किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर लेखन किया जाए तो उसे विशेष लेखन कहते हैं।**

डेस्क – समाचार पत्र-पत्रिकाओं , रेडियो और टीवी में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क का होता है।

उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है।

जिनसे अपेक्षा की जाती है कि संबंधित विषय या क्षेत्र में उसकी विशेषज्ञता होगी

विशेष लेखन के क्षेत्र

विशेष लेखन के कई क्षेत्र हैं :-

- व्यापार, खेल, मनोरंजन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, पर्यावरण, रक्षा, कानून, स्वास्थ्य इत्यादि।

बीट रिपोर्टिंग

संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आम तौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।

मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं।

एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ है कि वह अपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार होगा।

विशेष लेखन केवल भी रिपोर्टिंग नहीं है।

अब बीट रिपोर्टिंग के आगे एक तरह की विशेष कृति रिपोर्टिंग है , जिसमें ना सिर्फ उस विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसके रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा और शैली पर भी पूरा अधिकार होना चाहिए।

बीट रिपोर्टिंग और विशेष कृत रिपोर्टिंग में अंतर

बीट रिपोर्टिंग	विशेषीकृत रिपोर्टिंग
१ बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र की जानकारी होना पर्याप्त है उसे सामान्य तौर पर खबरें ही लिखनी होती है।	१ विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र से जुड़ी सूचनाओं का बारीकी से विश्लेषण कर पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करना होता है।
२ बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता कहते हैं	२ विशेष कृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहते हैं।

विशेष लेखन के अंतर्गत रिपोर्टिंग के अलावा विशेष विषय पर फीचर , टिप्पणी , साक्षात्कार , लेख , समीक्षा और स्तंभ भी आते हैं।

- फीचर लेखन
- संदेश लेखन
- संवाद लेखन
- पटकथा लेखन
- डायरी लेखन
- सृजनात्मक लेखन
- विज्ञापन लेखन
- कहानी लेखन
- विभिन्न माध्यम के लिए लेखन
- प्रतिवेदन लेखन
- कार्यालयी लेखन
- विज्ञापन लेखन परिभाषा, उदाहरण
- पत्रकारिता लेखन के विभिन्न प्रकार

पत्र-पत्रिकाओं को विशेष लेख लिखने वाले सामान्यतः पेशेवर पत्रकार ना होकर विषय विशेषज्ञ होते हैं।
जैसे खेल के लिए हर्षा भोगले , जसदेव सिंह और नरोत्तम पूरी आदि प्रसिद्ध है

विशेष लेखन की भाषा शैली –

विशेष लेखन में हर क्षेत्र की विशेष तकनीकी शब्दावलीयों का प्रयोग किया जाता है। जैसे –

1. कारोबार और व्यापार में तेजडिए, सोना उचला , चांदी लुढ़की आदि
2. पर्यावरण संबंधी लेख में आद्रता , टैक्सेस कचरा , ग्लोबल वार्मिंग आदि

विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। विषय अनुसार उल्टा पिरामिड या फीचर शैली का प्रयोग हो सकता है। पत्रकार चाहे कोई भी शैली अपनाएं लेकिन उसे यह ध्यान में रखना होता है कि खास विषय में लिखा गया आलेख सामान्य से अलग होना चाहिए।

विशेषज्ञता का अभिप्राय –

व्यवसायिक रूप से प्रशिक्षित ना होने के बावजूद उस विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर अपनी समझ को इस हद तक विकसित करना कि सूचनाओं की सहजता से व्याख्या कर पाठकों को उसके मायने समझा सके।
विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए स्वयं को अपडेट रखना चाहिए।

- पुस्तकें पढ़ना ,
- शब्दकोश आदि का सहारा लेना ,
- सरकारी-गैरसरकारी संगठनों से संपर्क रखना ,
- निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता आवश्यक है।

कुछ वर्षों में सबसे अधिक महत्व पूर्ण रूप से उभरने वाली पत्रकारिता आर्थिक पत्रकारिता है।
क्योंकि देश की राजनीति और अर्थव्यवस्था के बीच रिश्ता गहरा हुआ है।
आर्थिक मामलों की पत्रकारिता सामान्य पत्रकारिता की तुलना में काफी जटिल होती है।
क्योंकि आम लोगों को इसकी शब्दावली का मतलब नहीं पता होता।
आर्थिक पत्रकार के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है होती है कि वह किसी प्रकार सामान्य पाठक और जानकार पाठक दोनों को भलीभांति संतुष्ट कर पाता है।
किसी भी लेखन को विशिष्टता प्रदान करने के लिए महत्व रखने वाली बातें है कि हमारी बात पाठक श्रोता तक पहुंच रही है या नहीं।
तथा तथ्यों और तर्कों में तालमेल है या नहीं।

विशेष लेखन प्रश्न उत्तर

1 प्रश्न – विशेष लेखन किसे कहते हैं ? इसके प्रमुख तथा उसमें प्रयोग होने वाली भाषा शैली के बारे में लिखें।

उत्तर – समाचार पत्रों में सामान्य समाचारों के अलावा साहित्य , विज्ञान , खेल इत्यादि की भी पर्याप्त जानकारी मिलती है।
इसी कार्य के अंतर्गत जब किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर विशेष लेखन किया जाता है उसे विशेष लेखन कहते हैं।

विशेष लेखन के प्रमुख क्षेत्र – अर्थ , व्यापार , खेल , मनोरंजन , विज्ञान-प्रौद्योगिकी , कृषि , विदेश , पर्यावरण , रक्षा , कानून , स्वास्थ्य आदि।

विशेष लेखन की भाषा शैली – विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती।
यह उल्टा पिरामिड या फीचर शैली दोनों में लिखा जाता है यह विषय अनुसार निर्धारित होती है।
विशेष लेखन में हर क्षेत्र के विशेष तकनीकी शब्दावली का प्रयोग होता है जैसे –

- **कारोबार और व्यापार –** तेजड़िय , मंदड़िये ,सोना उछाला ,चांदी लुढ़की ,बाजार धड़ाम आदि।
- **पर्यावरण और मौसम –** आद्रता , टॉक्सिस कचरा , ग्लोबल वार्मिंग आदि
- **खेल –** जर्मनी ने घुटने टेके , ऑस्ट्रेलिया के पांव उखड़े , भारतीय शेर कंगारू पर भारी आदि

2 प्रश्न – विशेष लेखन में बीट तथा डेस्क का का अर्थ तथा महत्व बताइए।

उत्तर – बीट समाचार पत्रों तथा रेडियो , टेलीविजन में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क का होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है।
जिनसे यह अपेक्षा की जाती है कि उन्हें अपने विषय की पूरी जानकारी हो।
इन्हीं डेस्को पर काम करने वाले संवाददाता के बीच काम का विभाजन आम तौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।
मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं।
यदि एक संवाददाता की खेल है तो उसे उस क्षेत्र की सभी खेल संबंधी रिपोर्टिंग की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है।

3 प्रश्न – विशेष लेखन क्या है ?

उत्तर – किसी भी क्षेत्र में विशेष रुप से लेखन करना विशेष लेखन कहलाता है।

आप अखबार या पत्र-पत्रिका को देखते हैं उसमें खेल , अर्थव्यवस्था , पर्यावरण आदि विषयों के लिए विशेष प्रकार का लेखन प्रकाशित होता है।
उस अंश को ही विशेष लेखन कहा जाता है।

4 प्रश्न – जनसंचार माध्यमों में अलग डेस्क की व्यवस्था किसके लिए की जाती है ?

उत्तर – जनसंचार माध्यमों में विशेष रूप से अलग डेस्क की व्यवस्था की जाती है। यह डेस्क विभिन्न प्रकार के श्रेणियों में विभाजित होता है।
इस पर कार्य करने वाले संवाददाता या रिपोर्टर विशेष क्षेत्र में रूचि लेने वाले होते हैं। उनका एक विशेष क्षेत्र निर्धारित होता है।
यह उन्हीं विषयों को अध्ययन करते हैं तथा उस पर रिपोर्टिंग करते हैं।
यह विशेष क्षेत्र – कृषि , खेल , विज्ञान , योग आदि कोई एक होता है।

5 प्रश्न – बीट से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर – बीट को साधारण शब्दों में कहा जाए तो एक विशेष चिन्हित क्षेत्र होता है। जिसमें रिपोर्टिंग करने वाला पत्रकार विशेष रूचि तथा जानकारी रखता है।
यह क्षेत्र जनसंचार माध्यम में बीट कहलाता है।

6 प्रश्न – बीट रिपोर्टिंग और विशेष कृत रिपोर्टिंग में अंतर बताइए।

7 प्रश्न – विशेष संवाददाता किसे कहते हैं ?

उत्तर – विशेष संवाददाता उन्हें कहा जाता है, जो विशेष प्रकार की रिपोर्टिंग करते हैं। यह उस रिपोर्टर का मनपसंद क्षेत्र होता है , उसके रूचि का क्षेत्र होता है।

उस क्षेत्र में रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को ही विशेष संवाददाता कहते हैं। संवाददाता का साधारण अर्थ है संवाद देने वाला।

8 प्रश्न – बीट कवर करने वाला क्या कहलाता है ?

9 प्रश्न – अखबारों में विशेष लेख लिखने वाले कौन होते हैं ?

उत्तर – अखबारों में विशेष लेख लिखने वाले उस क्षेत्र के प्रख्यात व्यक्ति होते हैं , जिनका उस क्षेत्र में वर्षो का अनुभव होता है।

जैसे खेल के क्षेत्र में हर्षा भोगले हो सकते हैं। उसी प्रकार अन्य क्षेत्र में विशेष रिपोर्टिंग करने वाले उस क्षेत्र के जाने-माने व्यक्ति तथा जानकार होते हैं।

10 प्रश्न – विशेष लेखन की भाषा शैली की क्या विशेषता है ?

उत्तर – विशेष लेखन करते समय हमें उस विशेष क्षेत्र के शब्दावलीयों से परिचित होना चाहिए। उन सभी शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए जो उस क्षेत्र से संबंधित हो।

अगर आप अर्थव्यवस्था पर यह लेख कर रहे हैं तो सेंसेक्स उछला , चांदी लुढ़की , सोने की चमक फीकी , अर्थव्यवस्था औंधे मुंह गिरी।

इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

11 प्रश्न – विशेष लेखन के अंतर्गत आने वाले कोई चार क्षेत्रों के नाम लिखिए।

उत्तर – इसके अंतर्गत कुछ विषय हो सकते हैं – खेल , पर्यावरण , कृषि , योग , अर्थव्यवस्था , बाजार , राजनीति आदि।